ANVESHA-A Multidisciplinary E-Journal for all Researches Volume 1, Law Special Edition, June 2022
Bi annual, Bi lingual, Peer reviewed, Referred Journal
Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI - 10.55183/amjr.2022.vo1.lsi.009

# भ्रष्टाचार एवं वर्तमान राजनीति

**डॉ० जय कुमार सिंह**
**प्रवक्ता विधि विभाग, बी०एस०ए० महाविद्यालय, मथुरा।**
ई-मेल -108jay2012@gmail.com

## सारांश

भ्रष्टाचार वर्तमान युग में एक बड़ा जटिल कैंसर का रूप धारण करता जा रहा है और इस कैंसर रूपी रोग से भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है। जैसे-जैसे मनुष्य प्रगति करता जा रहा है, वैसे-वैसे मनुष्य के समक्ष विकराल समस्यायें उत्पन्न होती जा रही है। ऐसी ही विकट समस्याओं में से एक समस्या है राजनीति में भ्रष्टाचार की भ्रष्टाचार की समस्या एड्स जैसी लाइलाज बीमारी का रूप धारण करती जा रही है, जिस तरह एड्स का भी कोई प्रभावी निदान नहीं हो पा रहा है, ठीक उसी प्रकार से भ्रष्टाचार रूपी कैंसर का निदान भी मुश्किल होता जा रहा है। इस भ्रष्टाचार ने समाज में रहने वाले एक बड़े वर्ग को अपने आगोश में ले लिया है और शेष वर्ग पर अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा है। हमारे महापुरुष गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी एवं महात्मा गाँधी आदि के आदर्श और प्रेरणा एवं नैतिक मूल्यों का असर भी इस विकराल रूपी भ्रष्टाचार को नियंत्रित नहीं कर पा रहा है।

## बीज शब्द

भ्रष्टाचार, पश्चिमी संस्कृति, भौतिकवादिता, गाँधी दर्शन, राजनीति

## प्रस्तावना

अब प्रश्न यह उठता है कि भ्रष्टाचार क्या है? भ्रष्ट आचार ही भ्रष्टाचार (करप्शन) है। 'करप्शन' शब्द वास्तव में लेटिन शब्द 'करप्टस' से बना है, जिसका अर्थ होता है 'अनुचित'। भ्रष्टाचार के मायने यूँ तो व्यापक है, लेकिन इसे यदि परिभाषा की सीमा में बाँधने का प्रयास करें तो हम कह सकते हैं कि दर्शन, धर्म एवं नैतिकशास्त्र के अनुसार बौद्धिक एवं नैतिक अपवित्रता अथवा पतन भ्रष्टाचार है। अर्थशास्त्र के अनुसार किसी भी कार्य के लिए अवैधानिक रूप से राशि, सेवा या सामिग्री का लेन-देन भ्रष्टाचार है। संक्षेप में हम यह अवधारणा कर सकते हैं कि सार्वजनिक जीवन में स्वीकृत मूल्यों के विरुद्ध आचरण ही भ्रष्ट आचरण है, जिसे सामान्य जनजीवन में आर्थिक अपराधों से जोड़ा जा सकता है।

आज हम पश्चिमी संस्कृति से बहुत प्रभावित हो रहे हैं और भौतिकवादिता को विशेष महत्व दे रहे हैं। वस्तुस्थिति यह है कि विकसित देशों में अधिकांश वर्ग शिक्षित है और अपने अधिकारों के प्रति सजग है इसी वजह से वहाँ पर भ्रष्टाचार हमारे देश के अनुपात में बहुत कम अंश में व्याप्त है। इसका प्रमुख कारण है यूरोपियन देश के नागरिक अपने अधिकारों के प्रति बहुत जागरूक हैं और जहाँ कोई भी अधिकारों का हनन करता है, वहाँ वह तुरन्त न्यायालय की शरण लेते हैं। हमारे देश में एक बड़ा वर्ग अशिक्षित एवं निर्धन होने के कारण अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है जिसका लाभ राजनैतिक वर्ग एवं प्रशासनिक तंत्र द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष (परोक्ष) रूप से उठाया जाता रहा है।

वर्तमान में एक व्यक्ति विधायक या सांसद का चुनाव लड़ना चाहता है तो उसे टिकट प्राप्त करने के लिए बहुत लम्बा संघर्ष करना पड़ता है और लाखों रुपये पार्टी फण्ड में जमा करने पड़ते हैं।

Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI - 10.55183/amjr.2022.vo1.lsi.009

टिकट प्राप्त करने के पश्चात वह व्यक्ति चुनाव जीतने के लिए करोड़ों रुपये पानी की तरह बहा देता है। वोट और सपोर्ट को खरीदने के लिए शराब की बोतलें, नोटों की गड्डियाँ एवं अन्य लुभावने रकम की भेटें और वायदे किये जाते हैं और चुनाव जीतने के बाद विधायक दल के नेता को एक बड़ी पेशगी लाल बत्ती प्राप्त करने के लिए दी जाती है। सरकार में पद मिलने के उपरान्त ये राजनेता बेलगाम हो जाते हैं। राजनेताओं का पहला कार्य अपने चहेतों को अपने विभाग में विशेष कृपा पात्र बनाना होता और इन कृपा प्राप्त प्रशासनिक व्यक्तियों द्वारा एक मोटी रकम लक्ष्य के रूप में बेईमानी पूर्वक राजनेत द्वारा प्राप्त की जाती है। अपने कार्यकाल के प्रारम्भिक चरण में ही राजनेता द्वारा चुनाव एवं पद प्राप्त करने में किया गया सम्पूर्ण खर्चा वसूल कर लिया जाता है। यह राजनीतिज्ञों द्वारा भ्रष्टाचार की तरफ बढ़ाया गया कदम होता है। यदि प्रशासनिक तंत्र का कोई भी अधिकारी या आम व्यक्ति इस बेईमानी का खुलासा करता है या सहयोग नहीं करता है तब उसका परिणाम इंजीनियर काण्ड, इटावा, सी९एम९ओ९ काण्ड, लखनऊ आदि में परिवर्तित हो जाता है।

अभी आजादी के छः दशक से अधिक समय ही व्यतीत हुआ है कि हम अपनी आजादी के मूल आदर्शों को खो बैठे हैं। महात्मा गाँधी के दर्शन, ईमानदारी, सत्यता, अहिंसा तो आज उपहास की श्रेणी में आ गये हैं। राजनीतिज्ञों के लिए बेईमानी, झूँठ और हिंसा ब्रह्मास्त्र के रूप में उपयोग किये जा रहे है। राजनेताओं को नैतिकता, ईमानदारी से तो कोई सरोकार नहीं रहा है, उनका एक मात्र लक्ष्य कालाधन एकत्र करना रह गया है। यही कारण है कि एक राजनेता चुनाव से पूर्व लखपति होता है और चुनाव जीतने के बाद करोड़पति और मंत्री बनने के बाद अरब पति हो जाता है।

राजनीति भ्रष्टाचार का एक नया आयाम स्थापित होता जा रहा है। राजनीति का धुर्वीकरण एक परिवारवाद, जातिवाद एवं चन्द व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित होता जा रहा है, जिसके कारण राजनैतिक सत्ता इन्हीं व्यक्तियों द्वारा संचालित की जा रही है और बेईमानी एवं भ्रष्ट तरीकों से कमाया गया काला धन एक सीमित वर्ग पर एकत्रित हो रहा है जिसकी ताकत के बल पर यह राजनेता पूरा चुनाव लड़ते हैं और प्रशासनिक तंत्र पर इनका जबरदस्त दबाव होता है और जो अधिकारी इनके मनमाने ढंग में सहयोग नहीं करते हैं तो उनको अच्छे पद से हटा दिया जाता है। इन राजनेताओं का खौफ आम जनता पर भी होता है। जनता के प्रतिनिधियों को अपनी भूमिका का निर्वहन ईमानदारी एवं निष्पक्ष रूप से करना चाहिए एवं परिवारवाद एवं भाई-भतीजावाद से ऊपर उठ कर कार्य करना चाहिए। हमें संविधान की प्रस्तावना में दर्शाये गये मूल मंत्र को समझना चाहिए और जनता का धन जनता के कल्याणार्थ में लगाना चाहिए न कि जनता के धन का बेईमानीपूर्वक अपने स्वार्थ में संचय करना।

भ्रष्टाचार में भी भारत अग्रणी स्थान कायम किये हुए है भारत आजादी के पश्चात से ही घोटालों/भ्रष्टाचार की गिरफ्त में आ गया था। सन् १९४७ में जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व वाली सरकार के गठन के ठीक एक वर्ष पश्चात ही सन् १९४८ में जीप स्कैंडल का पर्दाफाश हुआ। तत्कालीन उच्चायुक्त वी९ के९ कृष्णमोहन ने एक विदेशी कम्पनी से ८० लाख रुपये अनुपयुक्त जीपों का सौदा किया। संवैधानिक सरकार के गठन के पश्चात सन् १९५८ में पहला बड़ा घोटाला जो कि हरिदास मैदा स्कैंडल (स्ण्ण्ब्ब् के शेयर) के नाम से प्रचलित हुआ और इस घोटाले के उजागर करने में फिरोज गांधी की मुख्य भूमिका रही थी। इसके पश्चात सन् १९७१ में आये नागरवाल स्कैंडल १९७१ के लोक सभा चुनावों में इन्दिरा

ANVESHA-A Multidisciplinary E-Journal for all Researches Volume 1, Law Special Edition, June 2022
Bi annual, Bi lingual, Peer reviewed, Referred Journal
Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI - 10.55183/amjr.2022.vo1.lsi.009

गाँधी की जीत पर उठाये गये सवाल और उस पर हुए आन्दोलनों ने पूरे दशक में हलचल पैदा कर दी थी। इसी का परिणाम रहा कि सन् १९७५ में आपातकाल लगा दिया गया। इसके विरोध में भारत का पहला बड़ा जन आन्दोलन जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुआ।

सन् १९५२ का सीमेंट घोटाला एवं उसके पश्चात सन् १९८९ का बोफोर्स घोटाला (६४ करोड) काफी चर्चा में रहा। १९९२ में हर्षद मेहता शेयर घोटाला भारत का सबसे चर्चित घोटाला रहा। इस घोटाले ने भारत की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। सन् १९९२ के पश्चात तो घोटाले कुकुरमुत्ता की तरह उपजने लगे। इनमें प्रमुख रूप से चीनी घोटाला (१९९४), स्टाम्प घोटाला (तेलगी-१९९५), सुखराम द्वारा किया दूरसंचार विभाग का घोटाला (१९९६), हवाला घोटाला (१९९७), केतन पारेख द्वारा किया गया शेयर मार्केट में घोटाला (२००१). ताज कोरिडोर घोटाला (२००३) (१७५ करोड), स्टाम्प पेपर घोटाला (२००६), खनन घोटाला (१९९९-२००४). विमान सौदा घोटाला (२००६) (९०,००० करोड़), आदर्श हाउसिंग सोसायटी स्वघोटाला (बम्बई) (२०१०), मधुकोडा द्वारा किया गया घोटाला (२००९). आई.पी.एल. घोटाला (२०१०). राष्ट्र खेल मण्डल, दिल्ली घोटाला (कह्मनवेल्थ २०१०), २-जी स्पेक्ट्रम घोटाला (२०१०) इस घोटाले में लिप्त राशि १,७६,६४५ करोड़ आँकी गई है, मनरेगा घोटाला, उ९प्र९-२०१० (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना लगभग ५,००० करोड़). छण्त्ण्भ्ण्डण् घोटाला उ९प्र९ (राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन-२०११, ८,६५७ करोड़), ज्ण्म्ज्ण् घोटाला उ९प्र९ (शिक्षक पात्रता परीक्षा २०११, ८७लाख) आदि घोटाले इसको उजागर करते हैं कि भारत भ्रष्टाचार में दिन प्रतिदिन आगे बढ़ता जा रहा है और विश्व के भ्रष्टतम देशों में शुमार होता जा रहा है।

विभिन्न देशों में भ्रष्टाचार की स्थिति पर नजर रखने वाली बर्लिन स्थित स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ट्रांसपेरेसी इंटरनेशनल सी९पी९आई९ (करप्शन परसेप्शन इण्डेक्स) की वर्ष २०११ की रिपोर्ट में भारत का सूचकांक ३.१ आंकलित किया गया है, जबकि विश्व के भ्रष्टतम १८३ देशों की सूची में भारत ९५वें स्थान पर आ गया है। इस रिपोर्ट में भ्रष्टाचार का आंकलन, धारण सूचकांक के आधार पर किया जाता है। इस सूचकांक का न्यूनतम मान ० व अधिकतम मान १० हो सकता है। किसी भी देश के लिए यह सूचकांक जितना कम होता है वहाँ भ्रष्टाचार का स्तर उतना ही अधिक माना जाता है। वर्ष २०११ की रिपोर्ट में सर्वोच्च स्थान न्यूजीलैण्ड, डेनमार्क व फिनलैण्ड को प्राप्त है, जिनका भ्रष्टाचार धारण सूचकांक ९.५ है। भ्रष्टाचार धारण सूचकांक १० के साथ सबसे नीचे सोमालिया एवं उत्तरकोरिया है।

आजादी से पूर्व राजनीति एक घाटे का सौदा थी। अतः भावनात्मक रूप से जो व्यक्ति या परिवार त्याग और आदर्श की काटों भरी राह पर चल सकते थे, वे ही आजादी की लड़ाई में कूदे। आम जनता में उनके त्याग का प्रभाव ऐसा रहा कि उनके प्रति लोगों में श्रद्धा की भावना जागी और १९५२ के प्रथम आम चुनाव से पूर्व १९३५ में बनी सरकार के लिए भी हुए चुनाव में लोगों ने सचमुच मत दिये थे। यद्यपि यह मतदान साम्प्रदायिक था, फिर भी लोगों में उत्साह था और जिन लोगों ने मत दिये थे जिनके मत डाले गये, वे नेता के प्रति श्रद्धा रखते थे, उसमें उनका विश्वास था।

राजनीति में भ्रष्टाचार बढ़ता गया और नैतिक ह्रास होता गया। जो लोग चुनाव जीते उन्होंने धन के बड़े पैमाने पर खर्च के बाद धन कमाने के रास्ते खोजने शुरू किये। इसके लिए उन्होंने पाँच आधार बनाये।

**१.**नौकरियों दिलाना और रिश्वत लेना।

Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI - 10.55183/amjr.2022.vo1.lsi.009

**२.**व्यापारियों एवं ठेकेदारों को लाइसेंस दिलाना और उनसे आय का कुछ प्रतिशत प्राप्त करना
**३.**माफिया गिरोहों को संरक्षण देना और उनसे चुनाव के दौरान मदद लेना।
**४.**सरकारी योजनाओं में घपला करना और उनमें हिस्सेदारी करना,
**५.**बैंकों तथा सरकारी वित्तीय संस्थाओंसे धन लेना और दिलाना तथा उसे कमीशन या दलाली खाना।
भारत में भ्रष्टाचार ने देश की कमर तोड़ दी है। ६५ वर्ष की आजादी में भारत में भ्रष्टाचार जिस तेजी से फैला है, शायद कैंसर भी उतनी तेजी से नहीं फैलता होगा। आज भ्रष्टाचार आम जीवन में व्याप्त हो गया है और यही कारण है कि देश की सारी विकास योजनाएँ वांछित परिणाम नहीं दे रही है। आज देश की जनता भ्रष्टाचार से त्रस्त है। अतः आवश्यक हो जाता है कि इस समस्या का निदान किया जाय। भ्रष्टाचार की समस्या के समाधान के लिए निम्न उपाय सहायक हो सकते हैं:-

**१.राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण :**

कहा भी गया है कि (बिंतंबजमत पे सवेज मअमतलजीपदह पे सवेज) चरित्र नहीं तो कुछ भी नहीं। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए चरित्र निर्माण की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। जब व्यक्ति विकसित होंगे, तो उनमें अपने आप सामुदायिक भावना का विकास होगा। यह सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करेगी। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण भ्रष्टाचार को समाप्त करने में सबसे अधिक कारगर होगा।

**२.राजनीतिक सुधार :**

भारत में भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए वर्तमान राजनीतिक संरचना में सुधार करना आवश्यक है। इसमें निम्नलिखित तत्वों को सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है:-
**अ.**राजनीति के लिए शैक्षिक योग्यता का निर्धारण,
**ब.**राजनीतिक अपराधीकरण पर रोक
**स.**राजनीतिज्ञ ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, कार्य के प्रति सजग होने वाला हो,
**द.**राजनीतिक दलों का नैतिक स्तर,
**य.**वर्तमान राजनीतिज्ञों को आदर्श राजनीतिक महापुरुषों का अनुसरण करना चाहिए
**र.**राजनीति में अंकुश लगाने के लिए लोकपाल तथा लोकायुक्त की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता
**व.**न्यायपालिका द्वारा २.जी स्पेक्ट्रम में दिये गये जैसे एतिहासिक निर्णय एवं सक्रिय भूमिका की आवश्यकता।

**३. देश का आर्थिक विकास :** भ्रष्टाचार का अर्थव्यवस्था से घनिष्ठ सम्बन्ध है। क्योंकि आर्थिक उद्देश्यों के लिए ही भ्रष्टाचार किया जाता है। यह आवश्यक नहीं है कि आर्थिक विकास से भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी, किन्तु *"विभुक्षितः किम् न करोति पापम्"* के अनुसार भूखे को भोजन देना आवश्यक है। भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए निम्न आर्थिक सुधार किए जाने की आवश्यकता है : -
**(अ).** निर्धनता का उन्मूलन,
**(ब).**राजनीति में परिवारवाद, भाई-भतीजावाद एवं जातिवाद का अन्त,
**(स).** कोटा तथा परमिट व्यवस्था का अन्त,
**(द).** रोजगार की सुविधाओं में वृद्धि,
**(य).** समाज में व्यावसायिक नैतिकता को प्रोत्साहन।

**४.प्रशासकीय सुधार :**

भ्रष्टाचार का सीधा सम्बन्धप्रशासकीय मशीनरी स है। अतः इस समस्या के समाधान के लिए प्रशासकीय मशीनरी में सुधार किए जाने की आवश्यकता है। प्रशासकीय मशीनरी में सुधार निम्न बिन्दुओं पर किया जाना चाहिए:-
**अ.** प्रशासकीय प्रशिक्षण का विकास,
**ब.** प्रशासकीय कुशलता में वृद्धि,
**स.** प्रशासकीय नैतिकता का विकास,

Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI - 10.55183/amjr.2022.vo1.lsi.009

**द.** नौकरशाही पर नियंत्रण। इसके लिए नौकरशाही में निम्न तत्वों को सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है –
(प) अधिकाधिक समस्याओं से निपटने की क्षमता (पप) उत्तरदायित्व को वहन करने की सद्इच्छा, (पपप) कठोर कार्यकुशलता और कर्मठता (पअ) सेवा की भावना।

## निष्कर्ष

भ्रष्टाचार मानव आचरण की समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिए मानव आचरण को सुधारने और संशोधित किए जाने की आवश्यकता है। उपर्युक्त उपायों के अतिरिक्त कुछ अन्य उपाय हैं, जिनसे भ्रष्टाचार की समस्या को सुलझाने में मदद मिलेगी : –

**अ.** भ्रष्टाचारियों की जननिन्दा,
**ब**. भ्रष्टाचारियों को कठोर दण्ड,
**स.** जनता को कानून का ज्ञान,
**द.** प्रतिष्ठा की नई अवधारणा का विकास,
**य.** जनजागरूकता का विकास,
**र.** उच्चतम एवं उच्च न्यायालयों की सक्रिय भूमिका (२.जी स्पेक्ट्रम जैसे एतिहासिक निर्णय की आवश्यकता),
**ल.** पुलिस की कार्य क्षमता में सुधार,
**व**. कल्याणकारी संस्थाओं का विकास, जो भ्रष्टाचार विरोध के लिए चेतना विकसित करें,
**श.** जन लोकपाल बिल तथा अन्ना हजारे के सुझाव, समाजसेवियों के सुझावों पर ध्यानोत्कृष्ण की आवश्यकता,
**ष.** सूचना के अधिकार का जनता द्वारा वृहद प्रयोग की आवश्यकता है, राजनीति में भ्रष्टाचार को समाप्त करने में मीडिया की सक्रिय भूमिका आवश्यक है।

## संदर्भ ग्रन्थसूची


- सामाजिक समस्यायें – राम आहूजा (२००४)
- परीक्षा मंथन, सामयिक निबन्ध भाग–१ (२०११)
- उ६ प्र६ लोअर सबअह्र्डिनेट मुख्य परीक्षा, सामान्य अध्ययन (२०११)
- ज्योति सागर (फरवरी २०११)
- अमर उजाला समाचार पत्र
- दैनिक जागरण समाचार पत्र